IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

धूमिल की कविताओं में सामाजिक जागरण

डॉ. प्रमोद कुमार सहनी
सरायरंजन, जिला समस्तीपुर

आधुनिक हिन्दी साहित्य के समकालीन कवियों के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर सुदामा पाण्डेय धूमिल समाज के इतने निकट रहे कि उनकी कविताएँ समाज की समस्याओं को अपने अंदर समेट लेती हैं। समाजिक चिंतन इनकी कविताओं की मुख्यधारा में शामिल हो जाती है। अपनी कवितओं में धूमिल द्वारा यह कहा गया है कि किस तरह समाज में परिवर्तन लाकर भविष्य को सुधारा जा सकता है, और किस तरह सामाजिक जागरूकता द्वारा रूढ़िवादिता और समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त किया जा सकता है। समाज मानवीय संबंधो की व्यवस्था है। समाज में रहकर ही मानव अपने संबंध की अहमियत को समझ पाता है। समाज ही उसे बेहतर जीवन जीना सिखाता है, उसे अच्छा नागरिक बनाता है।

धूमिल ने अपनी कविताओं में सामाजिक तथ्यों को हू–ब–हू प्रस्तुत कर यह स्पष्ट कर दिया है, कि अपने आप को समाज से अलग रखना कांव्य की जीवंतता के लिए अनुचित है। मानवीय रिश्तों को समाप्त करनेवाला असंतुलन ही सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' के काव्य का मुख्य और अनिवार्य विषय है।

धूमिल ने जिस तरह मानव के अलग–अलग रूपों को बेहतर बनाने की कोशिश की है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि करोड़ो मेहनती/मजदूरों की तरह 'साहित्यकार भी बेहतर समाज के निर्माण में लगा हुआ एक साधारण मानव हैं। उसे भी अन्य मेहनतकश व्यक्ति की तरह दो वक्त की रोटी के लिए मेहनत करना पड़ता है, खून–पसीना एक करना पड़ता है। शोषण और सामाजिक षड्यंत्रो का सामना करना पड़ता है। इनसे इनका सामना होते रहता है। साहित्यकार एक मजदूर की तरह मेहनत करता है। एक अच्छा समाज बनाने के लिए अपने कंधे पर कुदाल लिये एक मेहनती किसान की तरह अपनी कलम लेकर हमेशा सतर्क एवं जागरूक रहते है।

सामाजिक दुर्दशा :–

धूमिल की कविताओं में सामाजिक शोषण और अन्याय में पिसता हुआ आदमी का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह वही आम आदमी है, जो मेहनत–मजदूरी कर देश को आगे बढ़ाने में सार्थक प्रयास करता है। न चाहते हुए भी समाज के कुरीतिपूर्ण रीति–रिवाजों में पिसना पड़ता है।

धूमिल कहते है –

"लेकिन तुम चुप रहोगे
तुम चुप रहोगे और लज्जा के
उस निरर्थक गूँगेपन से सहोगे।"

सामाजिक विचारों पर पड़ी धूल और उगी हुई घास को साफ करते हुए धूमिल पूरे समाज को जागरूक करते हुए समाज को भीड़ का नाम देते हुए कहते है –

"भीड़ के खिलाफ रूकना
एक खूनी विचार है
क्योंकि हर ठहरा हुआ आदमी
इस हिंसक, भीड़ का
अंधा शिकार है।"

आर्थिक संकट :–

धूमिल के अनुसार आर्थिक असामानता का प्रकोप समाज और व्यक्ति की मूल और वास्तविक पहचान छीन लेता है। समाज छल–प्रपंच नीति की चादर ओढ़ लेता है और व्यक्ति दिन प्रति दिन आमानवीय व्यवहार को अपनाता जा रहा है। धूमिल द्वारा आर्थिक असंतुलन को आंक की पहल माना गया है।

वे कहते है –

"जादुई आंतक के साथ
जहाँ व्याकरण भाषा की सारी संभवनाएँ खो चुकी है –
और अर्थशास्त्र एक पौसरे में
बदल गया है।"

कवि धूमिल के अनुसार आर्थिक विषमता ने समाज को कई वर्गों में बांट दिया है। उच्च, मध्यम और निम्न वर्गो का अंतर लगातार गहरा होता जा रहा है।

कवि कहते है –

"कहीं ऐसा न हो कि पत्तों की जुबान में
जहर भर जाए
और पेड़ो में फूल दुबारा न आए।"

साम्प्रदायिकता तथा प्रादेशिकता

साम्प्रदायिकता को मुख्य रूप से चुनावी हथकण्डा बना दिया गया है। चुनाव को सफल और प्रभावी बनाने के लिए साम्प्रदायिक संघर्ष को छूट दी जाती है। पुराने काल खंड में विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा भी भारत को खण्ड–खण्ड करने लिए भी साम्प्रदायिक का सहारा लिया गया था। यही साम्प्रदायिकता आगे चलकर अशांति का पर्याय बन गई। अहिंसा की तीखी तलवार कैसे लोगो की गला काटती है ? यह समझाने की कोशिश धूमिल ने की है –

"मैने अंहिसा को
एक सत्तारूढ़ शब्द का गला काटते हुए देखा
.....
मैं यह सब देख ही रहा था कि एक नया रेल आया
उन्मत लोगों का बर्बर जूलूस। वे किसी आदमी
के हाथों पर गठरी की तरह उछाल रहे थ।
उसे एक दूसरे से छीन रहे थे। उसे घसीट रहे थे।"

साम्प्रदायिकता उन्मत्त लोगों की भीड़ है। यह एक पागलपन है। धर्म के नाम पर आम लोगों को ठगने और बहकाने की एक साजिश साम्प्रदायिकता है। राजनेताओं द्वारा इसका भरपूर प्रयोग किया जाता है। अपनी राजनैतिक रोटी सेकने के लिए राजनेताओ द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है। और अनपठ–नासमझ भोली–भाली जनता बेचारी इसका शिकार हो जाती है। धूमिल जी कहते है –

"वह देखो
प्रांतीयता का चेहरा लगाये हुए
कोई घुसपैठिया है?"

ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसे धूमिल ने स्पर्श नहीं किया है उन्होने समकालीन परिवेश पर मजबूत पकड़ बनायी है। धमिल की कविताओं की सफलता है कि सभी तरह की समस्याओं की तरफ पाठक का ध्यान आकर्षित किया है।

शिक्षा की दुर्दशा :–

समकालीन कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' ने समाज की बुनियादी आवश्कताओं को काव्य की जरूरत माना है। शिक्षा हर व्यक्ति के लिए एक समान आवश्यक है। चाहे समाजिक हो या व्यक्तिगत सभी तरह से शिक्षा की अहमियत महत्वपूर्ण है। मानव के चरित्र का निर्माण शिक्षा से होता है वर्तमान समय में लोग शिक्षा को रोजगार का माध्यम मात्र समझ कर शिक्षा प्राप्त कर रहे है। सरकार को भी अब शिक्षा व्यवस्था ऐसी बनानी चाहिए जिससे लोगों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार व नौकरी प्राप्त हो सके। लेकिन ऐसा किया नहीं जा रहा है।

देश में दोहरी शिक्षा व्यवस्था के कारण गरीब–अमीर के बच्चों की शिक्षा व्यवस्था में अन्तर हो जाता है। धमिल लिखते है –

"नौजवान अपनी जिम्मेदारियां
रोजगार–दफ्तरों को सौंपकर
चूहों की नस्ल पर बहस करते हैं।"

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि समकालीन कवि धूमिल की रचना धर्मिता ने अपनी संवेदनशीलता और अनूभूति को बेहतर तरीके से उजागर किया है। इनकी की कविताओं में बदलते हुए मानवीय संबंधो के संदर्भो का स्पष्टीकरण है।

संदभ सूची :–

1 राजशेखर – 'कल सुनना मुझे : भूमिका
2 मिश्र भवानी प्रसाद – 'समकालीन काव्य की दशाएँ'
3 धूमिल – 'संसद से सड़क तक'
4 धूमिल – 'सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र'
5 सार्थक – (पत्रिका)
6 सिंह रविनाथ – 'नयी कविता की भाषा'